सम्पादकीय

श्री गुरुग्रंथ साहिब की महत्ता

श्री गुरूग्रन्थ साहब जी महाराज कलिष्ठ भाषाओं और धर्म-क्रियाओं से परे जनभाषा में लिखा एवं सम्पूर्ण भारत का प्रतिनिधित्व करने वाला धार्मिक ग्रंथ है। आमतौर पर दर्शन, भक्ति और चिन्तन मनन के गंभीर ग्रन्थ संस्कृत भाषा में ही मिलते हैं। गुलामी के कालखण्ड में पंचम् गुरु अर्जुनदेव जी द्वारा सम्पादित श्री गुरुग्रंथ साहिब जी सामान्य जनभाषा में भारतीय मर्म को स्थापित करने वाला महान ग्रंथ है। अलग-अलग सामाजिक परिवेश व क्षेत्रों के 15 भक्त साहिबानों, 11 भट साहिबानों, चार गुरसिखों समेत 6 गुरु साहिबानों की पवित्र बाणी श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में दर्ज है, जो उस क्षेत्र व परिवेश का प्रतिनिधित्व करती है। सन् 1708 में, दशम् गुरू श्री गोविन्द सिंह जी ने इसमें अपने पिता श्री एवम् नवम् गुरु तेगबहादुर जी की की <u>वाणी</u> अंकित कर इसे नवीन रूप दिया और नान्देड़ साहिब की पवित्र धरती पर बाणी रूप में गुरुपद प्रदान किया।

श्री गुरू ग्रन्थ साहब आम भारतीय के लिए गुरू का दर्जा रखता है। गुरू वहीं है जो सुख दुःख में मार्ग दर्शन करे । वैसे तो नौवें गुरू श्री तेग बहादुर जी ने कहा है-

सुख दुखु दोनो सम करि जानै अउरू मानु अपमाना।। गउड़ी राग

परन्तु इस स्थिति को प्राप्त करना बड़ा ही कठिन कार्य है। घोर साधना करनी पड़ती है । ऐसा स्थित प्रज्ञ तो बिरला ही योगी होता है । उसको गुरू की आवश्यकता नहीं होती । लेकिन यदि दूसरी प्रकार से देखा जाये तो ऐसी स्थित प्रज्ञता की स्थिति तक पहुँचने के लिए भी तो गुरू का सहारा चाहिए ही । शायद कबीर ने इसलिए कहा होगा- बलिहारी गुरू आपने जिन गोविन्द दियो मिलाये ।

इसलिए साधारण मनुष्य जो तमाम तरह के गुणों और अवगुणों का समुच्चय है। जो साधना के रास्ते पर बहुत आगे निकल गया है उन सभी को गुरू की आवश्यकता है। श्री गुरूग्रन्थ साहब से श्रेष्ठ गुरू और भला कौन हो सकता है? श्री गुरूग्रन्थ साहब आज तक की सम्पूर्ण भारतीय साधना जो ज्ञान भक्ति और कर्म के क्षेत्र में प्रवाहित हुई है, का निचोड़ है - यह ज्ञान मार्ग, भक्ति मार्ग, और कर्म मार्ग का समन्वय सागर है। यह ऐसा अमृत है जिसका अधिकारी अमीर भी है गरीब भी है, छोटा भी है बड़ा भी, त्यागी भी है और योगी भी, गृहस्थी भी है और सन्यासी भी । किसी भी साधना और ज्ञान का मर्म उसकी बौद्धिक जुगाली में नहीं होता बल्कि उसकी सफलता का मापदण्ड यह है कि वह ज्ञान सामान्य जन में संस्कार बनकर उतरा है या नहीं । श्री गुरूग्रन्थ साहब ज्ञान को संस्कार बनाने की इसी प्रक्रिया का दूसरा नाम है। आज जब गुरू ग्रन्थ साहब को गुरू रूप में स्वीकारते हुए तीन सौ वर्ष बीत गये हैं तो संस्कार की इस प्रक्रिया को और भी गतिशील बनाने की जरूरत है ।

श्री गुरूग्रन्थ साहिब जी का भारत की सभी भाषाओं में अनुवाद किया जाना और भी जरूरी है। क्योंकि यह सारे देश की थाती है । हिन्दी भाषी क्षेत्र तो श्री गुरूग्रन्थ की <u>वाणी</u> से परिचित हैं क्योंकि यह <u>वाणी</u> इसी क्षेत्र की स्थानीय बोलियों में रची गई है। लेकिन इसे पूर्वोतर की बोलियों और भाषाओं एवं दक्षिण की भाषाओं में भी उपलब्ध करवाने के प्रयास किये जाने चाहिए । बहुत अरसा पहले संस्कृत भाषा के मर्मज्ञ डा. मंत्रिणी प्रसाद ने गुरूओं की <u>वाणी</u> को संस्कृत में अनूदित करने का कार्य प्रारम्भ किया था । अब वह किस चरण तक पहँचा है, ज्ञात नहीं है। भारत सरकार जब राष्ट्रीय स्तर पर श्री गुरूग्रन्थ साहिब के तीन सौ साला गुरूता गद्दी के समारोह मनाने जा रही है तो उसे इस स्थायी महत्व के कार्य की और भी ध्यान देना चाहिए।

-डा. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री